Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 69-72

सतत विकास लक्ष्य, भारतीय ज्ञान परम्परा और गांधी चिंतन-दर्शन

आशाराम खटीक

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार, वीएमओयू, कोटा (राजस्थान)

प्रोफेसर डॉ. सुबोध कुमार

आचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार, वीएमओयू, कोटा (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं गांधी चिंतन-दर्शन पर एकाग्र है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रदत्त सतत विकास लक्ष्यों के प्रति भारतीय दृष्टिकोण व इस ओर उन्मुख गांधीवादी विचारधारा के विविध आयामों पर केन्द्रित यह शोधपत्र एक समग्र विमर्श है। गांधीवाद के परिप्रेक्ष्य में बात की जाए तो वर्तमान में चल रहे वैश्विक शीत युद्धों, रूस-यूक्रेन युद्ध, आपसी अन्तरराष्ट्रीय तनाव, अराजकता, अशांति, व्यापक स्तर पर असत्य, हिंसा और विनाश की ओर ले जाती भौतिकता एवं विलासिता की अंधी दौड़, विकास के नाम पर संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, गला काट प्रतिस्पर्धा आदि तथ्यों की पड़ताल को प्रकाशित करता यह आलेख हमारी प्रकृति संरक्षण की विरासत और संस्कृति को भी उजागर करता है। पिछले दशकों में भारत ने उदारीकरण, अर्थव्यवस्था का विविधीकरण, विकास नीतियों के हित में समरूपता के माध्यम से बड़ी उन्नति हासिल की है। दुनिया भर के देशों का एक साझा लक्ष्य-सतत विकास लक्ष्य या एसडीजी के निर्धारित मानकों को हासिल करने की दिशा में भारत लगातार आगे बढ़ रहा है। गांधी दर्शन का मूल लक्ष्य ही समाज में यथार्थ और समृद्ध जीवन को स्थापित करना है, जो कि सबके लिए समानता और आत्मनिर्भरता पर आधारित समाज रचना, ग्राम स्वराज, सर्वोदय, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, न्यासिता का भाव, स्वदेशी, सर्वधर्म समभाव आदि नैतिक उत्थान के मूल्यों वाले मार्ग पर एकाग्र है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आज समग्र संवैधानिक, नैतिक और राजनीतिक बदलाव की आवश्यकता है और इसके लिए हम सबके एवं सरकार द्वारा साझा प्रयास करने की जरूरत है।

संकेताक्षर—*गांधी मूल्य और दर्शन, सतत विकास लक्ष्य, संयुक्त राष्ट्र, विश्व शांति*

प्रस्तावना

विकास सतत रूप से बहुआयामी एवं परिवर्तनशील रहने वाली अनवरत अवधारणा है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक वे मुख्य आयाम है जो मानवीय विकास को निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते है। समृद्ध एवं कुशल मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र के विकास की संकल्पना का सबसे महत्वपूर्ण अंश है। इसके बिना किसी भी देश के विकास की परिकल्पना को साकार किया जाना असंभव प्रतीत होता है। पर विकास के नाम पर विनाश की ओर बढ़ती वर्तमान परिस्थितियाँ निश्चित रूप से एक दुर्दान्त महाप्रलय की दस्तक प्रतीत होती है। समय-समय पर प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा चेतावनी की यह आहट मानवमात्र को भयावह अंजाम दे भी चुकी पर मानव इसे गंभीरता से नहीं लेकर कुछ समय में ही भुला दे रहा है, जो सर्वथा अनुपयुक्त है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी वस्तुतः प्राचीन संस्कृति के तत्त्वों से जुड़े हुए थे। प्राचीन संस्कृति से अभिप्रायः वे मान्यताएं एवं परिप्रेक्ष्य हैं, जो उन्होंने न केवल अपने जीवन में स्वीकार किए थे, बल्कि उन तत्त्वों और मान्यताओं के आधार पर उत्तर सामंतवादी तथा उपनिवेशवादी व्यवस्थाओं पर प्रहार कर नवीन आधारों को स्थापित करने का प्रयास भी किया।

सामाजिक तथा राजनीतिक संघर्षों के लिए जो भी व्यवस्थाएँ थी, उनके प्रति प्रतिरोध करने के कई साधन उन्होंने स्वीकार किए परन्तु जल, जंगल, जमीन, जानवर और जननी अर्थात भूमि से जुड़ाव का उनका दर्शन स्तुत्य है। प्रकृति के उपासक के साथ ही साथ सर्वोदय, प्राकृतिक चिकित्सा, दया, करुणा, सत्याग्रह, रामराज्य की अवधारणा, शारीरिक श्रम, प्रार्थना, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, मानवता आदि के जरिए बापू सदैव भारतीय संस्कृति के पोषक रहे।

आज समूचा विश्व हिंसा, धार्मिक उन्माद, नस्लीय टकराव और सामाजिक भेदभाव जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। मनुष्य विचारों से हिंसात्मक होता जा रहा है। आतंकवाद या फिर देशों के बीच आपसी युद्ध जैसे हालात है। इन सबसे मानव अस्तित्व के लिए खतरे का गहन प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है। इंसान ने जहां विज्ञान, तकनीक और यांत्रिकी में विकास और उसके उपयोग से अपार समृद्धि हासिल की है वहीं दूसरी ओर स्वार्थ, लोभ, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन, और हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर आपसी कलह, लूटखसोट, अतिचार और अतिक्रमण की राह जैसे विनाशकारी मार्ग को अपना रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा हाल में ही चल रहे रूस एवं यूक्रेन युद्ध में मध्यस्थता के बावजूद कोई आशातीत हल अथवा स्थाई समाधान नजर नहीं आ रहा। रूस एवं यूक्रेन युद्ध में युद्ध के दौरान रूस की तरफ से कई बार परमाणु हमले की धमकी दी चुकी है और रूस ने इस संबंध में तैयारियों को भी दुनिया के समक्ष प्रदर्शित किया है। आज पूरा विश्व अघोषित शीत युद्ध के मुहाने पर अशांति के साथ भयपूर्ण वातावरण में अस्थिरता के साथ खड़ा दिख रहा है। ऐसी विकट परिस्थितियों में गांधी दर्शन कहीं ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। व्यक्ति के विनाशकारी विचारों को बदलना और उन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। इसीलिए आज जरूरत दुनिया में भौतिक संपदा के साथ-साथ मानव अस्तित्व को बचाने के लिए एकमात्र गांधीमार्ग की ही है।

सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) वर्ष 2030 तक गरीबी के समस्त आयामों को समाप्त करने के लिए एक साहसिक और सार्वभौमिक समझौता है जो सबके लिए एक समान, न्यायपूर्ण और सुरक्षित सृष्टि का सृजन कर चहुंमुखी विकास व समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध है। सतत विकास से अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो भावी पीढ़ियों की अपनी जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किए बिना वर्तमान समय की आवश्यकताएँ पूरी करे। हम भारतीयों एवं हमारी सभ्यता और संस्कृति के लिए पर्यावरण संरक्षण, जो सतत विकास का अभिन्न अंग है, कोई नई अवधारणा नहीं है। भारत में प्रकृति और वन्यजीवों का संरक्षण अगाध आस्था की बात है, जो हमारे दैनिक जीवन में प्रतिबिंबित होता है और पौराणिक गाथाओं, लोककथाओं, धर्मों, कलाओं, और लोक संस्कृति में रचा-बसा एवं वर्णित है।

सर्वत्र गरीबी और भुखमरी समाप्त कर खाद्य सुरक्षा, सतत कृषि को बढ़ावा और बेहतर पोषण के साथ स्वस्थ जीवन एवं समावेशी विकास व न्यायसंगत गुणवत्तायुक्त शिक्षा का सुनिश्चय, सभी के लिए आजीवन शिक्षा प्राप्ति के अवसरों को बढ़ावा, लैंगिक समानता तथा बालिका व महिला सशक्तीकरण, स्वच्छ जल की सतत उपलब्धता एवं प्रबंधन, सभी के लिए किफायती, भरोसेमंद व सतत ऊर्जा की उपलब्धता, समावेशी एवं संचारणीय आर्थिक विकास, पूर्ण और लाभकारी रोजगार, समुत्थानाशील अवसंरचना का निर्माण, समावेशी और संधारणीय औद्योगीकरण को बढ़ावा, नवोन्मेष को प्रोत्साहन, विभिन्न देशों के अन्दर व उनके बीच असमानता को कम करना, शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, समुत्थानशील व संचारशील बनाना, जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तात्कालिक कार्यवाही, महासागरों, समुद्रों और समुद्रीय संसाधनों का संरक्षण, स्थलीय पारिस्थितिकीय तंत्र का संरक्षण एवं पुनरूद्धार, वनों का सतत विकास तथा मरुस्थल रोधी उपाय, भूमि अवक्रमण को रोकना और प्रतिवर्तित करना व जैव विविधता की हानि को रोकना, न्यायपूर्ण, संवेदनशील और शांतिपूर्ण, कारगर व समावेशी संस्थाओं का निर्माण, कार्यान्वयन के उपायों का सुदृढ़ीकरण और सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी इत्यादि बिन्दु सतत अथवा टिकाऊ विकास की परिकल्पना के अन्तर्गत आते हैं।

सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य सबके लिए समान, न्याय संगत, सुरक्षित, शांतिपूर्ण, समृद्ध और रहने योग्य विश्व का निर्माण करना एवं विकास के तीनों पहलुओं अर्थात् सामाजिक समावेश, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को व्यापक रूप से समाविष्ट करना है। इन नए लक्ष्यों का उद्देश्य विकास के अधूरे कार्य को पूरा करना और ऐसे विश्व की संकल्पना को मूर्त रूप देना है, जिससे चुनौतियाँ कम और आशाएँ अधिक

हों। सतत विकास आधुनिक समय का ज्वलंत नारा है। सतत या टिकाऊ विकास शब्द का पहली बार प्रयोग 1987 में ब्रट लैण्ड कमीशन रिपोर्ट में किया गया था। इसे धारणीय, पोषणीय या संपोषणीय विकास भी कहा जाता है जिसमें विकास, प्रकृति के साथ मानव का सहयोग, साहचर्य एवं उसके प्रति श्रद्धा व सम्मान की निहित भावना पर आधारित होता है। इसका तात्पर्य है कि मानव समाज केवल तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र ही नहीं अपितु स्थाई तौर पर भविष्य के लिए विकास का आधार भी प्रस्तुत करे। वास्तव में संपोषणीय विकास प्रयत्नों में गुणवत्ता के विस्तार पर अधिक बल देती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में हम पृथ्वी को माता मानते है और सतत विकास सदैव हमारे चिन्तन, दर्शन एवं विचारधारा का मूल सिद्धान्त रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा हो या वैदिक चिन्तन दर्शन, हमारे धर्म और संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को अंगीकृत कर सर्वोच्च स्वीकार्यता दी गई है। सर्वधर्म समभाव, संप्रभुता, सौहार्द, सहिष्णुता, ज्ञान, शांति और मैत्री की ओर कदम बढ़ाती भारतीय विदेश नीति में भी गुटनिरपेक्षता को अपनाया गया है। सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अनेक मोर्चों पर कार्य करते हुए हमें हमारे पूज्य बापू और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की याद आती है, जिन्होंने हमें चेतावनी दी थी कि धरती प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है पर प्रत्येक व्यक्ति के लालच को नहीं। भारत लंबे अरसे से प्रतिबद्धता के साथ सतत विकास के पथ पर आगे बढ़ने का निरन्तर प्रयास कर रहा है तथा इसके मूलभूत सिद्धान्तों को अपनी विभिन्न नीतियों में शामिल करता आ रहा है।

सतत विकास के प्रयास

सतत विकास लक्ष्यों के मद्देनजर पृथ्वी और उसके पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने के लिए जून 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो नगर संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसमें विकसित एवं विकासशील 178 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसे प्रथम पृथ्वी सम्मेलन या रियो सम्मेलन के नाम से जाना जाता है। इसी सम्मेलन में कार्यक्रम-21 के नाम से जो रूपरेखा प्रस्तुत की गई, उसमें संपोषणीय या सतत विकास के लिए निर्देशक सिद्धान्त दिये गए है।

द्वितीय पृथ्वी सम्मेलन जून 1997 में न्यूयॉर्क में आयोजित किया गया किन्तु इसमें निश्चित मसौदों व प्रस्तावों पर कोई ठोस समझौता नहीं हो पाया। तृतीय पृथ्वी सम्मेलन अगस्त 2002 में दक्षिण अफ्रीका की राजधानी जोहान्सबर्ग में आयोजित किया गया। इसका मुख्य विषय ही सतत पोषणीय विकास था जिसके कारण इसे सतत पोषणीय विकास विश्व शिखर सम्मेलन के नाम से भी जाना जाता है। इस सम्मेलन में भारत जैसे विकासशील देशों ने इस मुद्दे को उठाया कि अति उत्पादन एवं अति उपभोग पोषणीय नहीं है। विकसित देशों का उपभोग स्तर काफी उच्च है। अपने जीवन स्तर के उन्नयन की मनुष्य की लगातार बढ़ती आकांक्षा के कारण सभी प्रकार के नए तकनीकी आविष्कार व नवाचार हुए हैं जिन्होंने जीवन को आरामतलब तो बना दिया परन्तु बदले में भोजन, वायु, खनिज और ऊर्जा की मांग बढ़ा दी है। पृथ्वी की नवीकरणीय क्षमता सिमित होने के कारण ही संसाधन भी सीमित है। जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन न हो पाने के कारण डायनासोर जैसे विशालकाय प्राणियों के विलुप्त होने की बात हम सब जानते हैं। डर इस बात का है कि पृथ्वी की एक चौथाई प्रजातियां 2050 तक विलुप्ति के कगार पर खड़ी है।

गौरतलब है कि 4 नवंबर, 2016 में पेरिस में हुए विश्व जलवायु सम्मेलन में जो तथ्य उभरकर सामने आए उनसे परिचित होना वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए नितान्त आवश्यक है। विगत दो-तीन दशाब्दियों से धरती के औसत तापमान का बढ़ना अनवरत जारी है जिसे रोक पाने में असमर्थता जताई जा रही है। दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने धरती के बढ़ते तापमान को चार डिग्री तक स्थिर किए जाने का लक्ष्य रखा है। जिसमें व्यापक लक्ष्य "वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना" और "तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सिमित करने" के प्रयासों को आगे बढ़ाना है। किन्तु लगता है यहां तक आते-आते धरती की आधी आबादी, असंख्य प्राणीमात्र, जीवों और वनस्पतियों को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

विश्व जलवायु सम्मेलनों में वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी देशों का एकमत नहीं हो पाना दुर्भाग्य है। पूंजीवाद और विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश भारत सहित अन्य विकासशील देशों पर ही दबाव बनाए हुए हैं। यद्यपि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास के साथ पर्यावरण के वैश्विक संतुलन

को बनाये रखने के जो फॉर्मूला दिया, उसकी प्रशंसा हुई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सभी देशों के कार्बन उत्सर्जन की मात्रा को कम करने का आग्रह करते हुए सौर ऊर्जा और वर्षा जल संरक्षण की अनिवार्यता पर बल दिया।

सतत विकास के गांधीवादी उपाय

ब्रह्माण्ड के पंचतत्त्व-क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इत्यादि के साथ वनस्पतियां भी सम्मिलित हैं। ऋग्वेद के प्रथम शब्द "अग्निमीले" से ही वैदिक ऋषियों की सूर्य अथवा अक्षय ऊर्जा के प्रति आस्था की अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। मातृभूमि हमारी माता की तरह हमारा पोषण, वर्द्धन और रक्षण करती है। मानव को पुत्र के समान अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए धरती के संरक्षण की दिशा में आगे आना होगा। पेयजल की किल्लत सहित कई नदियाँ सीवर के पानी की निकासी का स्रोत मात्र बन गई है, जिससे गंगा जैसी पवित्र नदियाँ तक प्रदूषण की भयंकर मार झेल रही है। वैदिक काल में नदियों और वर्षा के जल को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। सप्तसैन्धव नदियों के तटों पर ही वैदिक जीवन फलीभूत हुआ है जिससे नदियों के साथ उनका आत्मीय संबंध कायम है। शुद्ध वायु जीवन के लिए परमावश्यक है। आज ग्रीन हाउस इफैक्ट और दूषित पर्यावरण के चलते ओजोन मण्डल में हुए छिद्र से मानव जीवन खतरे में है। सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी से बचाने वाली ओजोन की मोटी परत का वेदों में उल्लेख होना वैदिक ऋषियों के पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होने का परिचायक प्रमाण है। हमारा यह दायित्व है कि हम वेदों के इस महान् संदेश का प्रसार करें।

भारतीय संस्कृति में पेड़-पौधों और खेत, कूप और जलस्रोत आदि के सम्मान का विधान है। आज भी भारत में विभिन्न व्रत-त्योहारों पर स्त्रियों द्वारा पीपल, वट, नीम, शमी, तुलसी, आम्र, केले और जामुनादि की पूजा की जाती है। वैज्ञानिक पक्ष से अनभिज्ञ होते हुए भी भारतीय वनिताओं में धार्मिक और सामाजिक भावना के कारण ही वृक्षों के प्रति सम्मान बरकरार है।

निष्कर्ष

वर्तमान की महत्ती आवश्यकता सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गांधीवादी मूल्यों और भारतीय दर्शन पर अवलम्बित नजर आते हैं। विकास एवं उत्पादन वृद्धि के लिए पर्यावरण-मित्र प्रौद्योगिकी का विकास एवं प्रसार तथा नवीन परियोजनाओं की स्थापना से पूर्व पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकीय सन्तुलन और आर्थिक दक्षता के साथ ही साथ ऊर्जा व प्राकृतिक संसाधनों का इष्टतम मर्यादित दोहन एवं उपभोग उपयुक्त मापन एवं जांच-परख कर प्रयुक्त किया जाए। पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन एवं उन्नयन के साथ ही इसके नैसर्गिक अवनयन को रोकने की दिषा में कठोर कानून बनाकर उनकी कड़ाई से पालना सुनिश्चित की जाए। सरकार, नौकरशाही, मीडिया, गैर सरकारी संगठनों के साथ ही जनसहभागिता में इजाफा कर इनकी प्रभावी एवं रचनात्मक भूमिका बढ़ाई जाए। इन्हीं सद्कर्मों और ज्ञान मार्ग के समन्वय से हम सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर गांधीपथ का अनुसरण करते हुए वर्तमान और भविष्य को संवार सकते है। अन्यथा हमारी भावी पीढ़ियाँ विरासत में मिले प्राकृतिक संसाधनों के दोहन व दुरुपयोग से उपजे खतरों के कारण हमें कभी माफ नही करेंगी और आगामी समय में प्रलयकारी प्राकृतिक आपदाओं की आशंका सहित अनेकानेक घोर संकटों से निजात पाना नामुमकिन होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जोशी, डॉ. पयोद, गांधी दृष्टि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2022.
2. चौदहवां इण्डो-जापान अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन, बाइकॉन-2019, सतत विकास लक्ष्य, बियानी महिला महाविद्यालय, जयपुर, 2019
3. चन्देल, डॉ. धर्मवीर, गांधी चिन्तन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019.
4. 60वां एआईपीएससी एवं अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार, वसुधैव कुटुम्बकम्,महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2023.
5. दाधीच, डॉ. नरेश, महात्मा गांधी का चिन्तन, रावत प्रकाशन जयपुर, 2014.
6. सचदेव, विश्वनाथ, भवन्स प्रकाशन, नवनीत, अक्टूबर 2019.
7. शर्मा, प्रो. बी.एम., डॉ. रामकृष्ण एवं डॉ. सविता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019.
8. स्मिल, वॉक्लेव, हाऊ द वर्ल्ड रियली वर्क्स, पेन्गुइन रेन्डम हाऊस, यू. के. 2022.
9. राव, के. रामाकृष्णा, आईसीपीआर, मेट्रिक्स पब्लिकेशन, गांधी एण्ड अप्लाइड स्पिरिचुअलिटी, 2011.
10. बुल्ला, डेविड डब्ल्यू., गांधी एडवोकेसी जर्नलिज्म एण्ड द मीडिया, पीटरलैण्ड, 2022.